ओ३म्

'अनादि से अनन्त काल की यात्रा में जीवात्मा कर्मानुसार अनेक प्राणी योनियों में विचरता रहा है और आगे भी विचरेगा'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादूनं

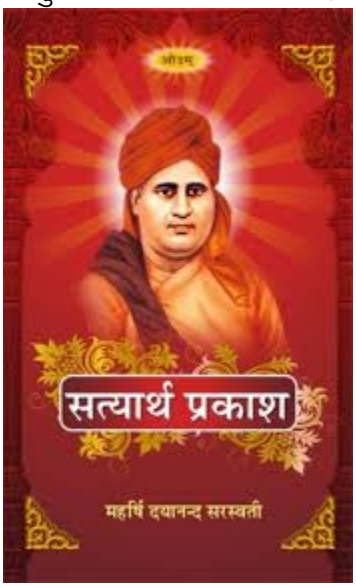

यदि हम आर्यसमाज की बात न करें और इतर मनुश्यों व समुदायों की बातें करें तो हम देखते हैं कि मनुश्य को जड़ व चेतन का भेद व उसका तत्वार्थ ज्ञात नहीं हैं मनुश्य का जन्म होता है, माता–पिता उसका पालन करते हैं, स्कूल व कालेजों में पढ़ने के लिए उसे भेजा जाता है, वहां जो पढ़ाया जाता है वह पढ़ता है, उसके बाद वह अपने भविश्य के कार्य व व्यवसाय को चुनता है और उसके लिए जो करना होता है, उसे करते हुए वह अपने मुकाम व लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता हैं मुकाम प्राप्त हो जाये तो सुख मिलता है, नहीं तो वह कुछ दुःखी व चिन्ता में रहते हुए अपना जीवन व्यतीत कर देता हैं वृद्धावस्था आती है, कुछ को रोग हो जाते हैं, उपचार चलता है और 50 से 80 के बीच अधिकांष ा स्त्री व पुरुशों की जीवनलीला समाप्त होकर मृत्यु हो जाती हैं यदि इनमें कोई बचता है तो वह कुछ वर्श बाद चल बसता हैं जीवित व मृतक मनुश्य कहां से आये थे यह उन्हें पता नहीं होतां कहां जाना है व मरकर गये, इसका पता न उनको था न माता–पिता व परिवार के लोगों को ही होता हैं परिवार के छोटे व बड़े लोग हैं, वह भी अपने कार्यों में लगे हुए सुखों को भोगने की इच्छा रखते हुए व प्रयास करते हुए अपने जीवन को आगे बढ़ाते रहते हैं और जब तक मृत्यु न आये यही क्रम चलता हैं प्रायः सभी लोग इसी को जीवन मानते हैं उनके अनुसार जीवन का और कोई विष ेाश लक्ष्य आदि नहीं हैं वेद से इतर अनेक मत–मतान्तर हैं, सबकी अपनी अपनी मान्यतायें हैं कुछ बातें सत्य हैं तो बहुत सी मिथ्या व अविवेकपूर्ण भी हैं वह सब अपने अपने अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं

वैदिक धर्मियों के पास सृश्टि के आरम्भ में ईष वर द्वारा दिया गया वेदों का सत्य ज्ञान है जिसमें मनुश्य जीवन के उद्देष य व लक्ष्य को तो बताया ही गया है, उसकी प्राप्ति के साधनों ईष वरोपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, पितृयज्ञ आदि सहित परोपकार व सेवा आदि के कामों का विधान भी किया गया हैं वेदों के अनुसार यह संसार ईष वर, जीव व प्रकृति इन तीन मौलिक सत्ताओं व तत्वों से मिलकर बना हैं ईष वर व जीव चेतन तत्व हैं ईष वर सर्वज्ञ एवं जीव अल्पज्ञ है, ईष वर सर्वव्यापक है तो जीवात्मा एकदेष ी, अल्पपरिमाण, ससीम, कर्मानुसार जन्म व मृत्यु के बन्धनों में बंधा हुआ हैं ईष वर सच्चिदानन्दस्वरूप होने से सदा–सर्वदा आनन्द से युक्त रहता हैं वह सर्वान्तर्यामी होने से जीवात्मा के अन्दर व बाहर सर्व़व्यापक हैं जीवात्मा सच्चित (सत्य+चेतन) है, आनन्द से युक्त नहीं है जैसा कि ईष वर हैं चेतन सत्ता होने के कारण इसे आनन्द वा सुखों की अभिलाशा रहती हैं अज्ञान के कारण यह भौतिक पदार्थों की ओर अपना मुख करता हैं भौतिक पदार्थों में सीमित व अल्प मात्रा में सुख हैं उसी में यह उलझ जाता हैं भौतिक सुखों के लिए ही यह धन व द्रव्यों का संग्रह करता हैं परिग्रही बनता हैं धनोपार्जन व भौतिक सुखों में ऐसा लिप्त होता है कि ईष वर व जीवात्मा के स्वरूप व इनके गुणों की उपेक्षा कर देता हैं **जीवात्मा को लक्ष्य का ज्ञान कराने में सबसे बड़ी बाधा मत–मतान्तर हैं इसका कारण है कि इनमें ईष वर व जीवात्मा का यथार्थ, तर्क व युक्तिसंगत ज्ञान नहीं है और न ही यह जानना चाहते हैं** इन मत–मतान्तरों की नींव अविद्या पर हैं ऐसा नहीं कि सभी मत–मतान्तरों में ष ात प्रतिष ात अविद्या ही हो, किसी में कम व किसी में अधिक भाग अविद्या का है परन्तु इनमें जितनी अविद्या है उसके कारण यह ईष वर व जीवात्मा को भली प्रकार से जान नहीं पा रहे हैं यह सभी मत–मतान्तर अपने जीवन के उद्देष य व लक्ष्य **'धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष'** तथा उसके साधनों को जानकर उनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करते क्योंकि उन्हें इनका यथार्थ स्वरूप विदित नहीं हैं **संसार में अष ाान्ति का कारण भी अविद्या व मिथ्या ज्ञान ही सिद्ध होता हैं**

यदि यह अविद्या व मिथ्याज्ञान समाप्त हो जाये तो संसार से दुःख व अ ाान्ति अपने आप दूर हो सकती हैं संसार व जीवन विशयक सत्य स्थिति को जानकर कोई मनुश्य किसी के प्रति अन्याय व अत्याचार नही कर सकतां हिंसा व चोरी सहित धन व द्रव्यों का परिग्रह भी नहीं कर सकतां इसका कारण यह है कि उसे ज्ञात हो जाता है कि सृश्टि के सभी पदार्थों ई वर ने सभी मनुश्यों व प्राणियों के लिए बना रखे हैं और इन पर सबका समान अधिकार हैं **ई वर की आज्ञा 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' है कि मनुश्यों को सभी सांसारिक पदार्थों का भोग त्यागपूर्वक करना हैं** नहीं करेंगे तो दण्डनीय होंगें यह दण्ड मनुश्य को इस जन्म व परजन्म में कब कैसे ई वर से प्राप्त होगा उसका ज्ञान ई वर ने आव यक न समझ कर वेदों में नहीं दिया हैं फिर भी हम अपने अपने विवेक से व ाास्त्रों में ऋशियों द्वारा किये गये विवेचन को पढ़कर कुछ कुछ जान सकते हैं

ई वर, जीव व प्रकृति तीनों अनादि, अनुत्पन्न, सनातन, सदा रहने वाले, अनन्त काल तक रहने वाले, अमर व अविना ाी मौलिक पदार्थ हैं ई वर अजन्मा होने से उसका जन्म व अवतार कभी नहीं होतां मनुश्य व अन्य प्राणियों के रूप में जीवात्मायें ई वरीय व्यवस्था से जन्म लेती हैं इसका आधार पूर्व जन्म के कर्म होते हैं ई वर हमारे पूर्व के सभी अनन्त जन्मों का साक्षी हैं किसी जीवात्मा के जिन कर्मों का भोग करना ाोश है, उनमें से कुछ व सभी कर्मों के आधार पर ई वर जीव को मनुश्य व अन्य योनियों में पक्षपातरहित होकर जन्म देता हैं यही क्रम अनन्त काल तक आगे भी चलना हैं इस जन्म में हम मनुश्य बने हैं हमें अपने जन्म से अब तक घटी प्रायः सभी प्रमुख बातों का किसी का कम व किसी का पूर्ण ज्ञान हैं जन्म से पूर्व हम थे या नहीं, थे तो कहां थे और नहीं थे तो इस जन्म में हमारी आत्मा जो कि एक चेतन सत्ता है, जो सुख, दुःख, हानि, लाभ, मान, अपमान, ईश्र्या व द्वेश का अनुभव व व्यवहार करती है, वह कहां से व कैसे इस मानव ारीर में आ गईं इन सभी प्र नों का समुचित निर्भ्रान्त उत्तर मत–मतान्तरों के ग्रन्थों व आचार्यों से नहीं मिलता, केवल वेद और वैदिक साहित्य में मिलता हैं पुराण आदि ग्रन्थ इस विशय में परस्पर विरोधी व अवि वसनीय बातें करते हैं **इस जन्म से पूर्व सुख व दुख का अनुभव करने वाली हमारी आत्मा का अस्तित्व नहीं था, इसका किसी के पास कोई भी प्रमाण नहीं हैं बिना प्रमाण के ही हम यह मानते रहते हैं कि हमारा अस्तित्व नहीं थां हमें तो यह व्यवहार बुद्धिहीनता व मूर्खता का प्रतीत होता हैं** हम जीवात्मा के अस्तित्व, उसके स्वरूप, गुण–कर्म–स्वभाव व उत्पत्ति विशयक प्र नों को जानने का भी प्रयास नहीं करतें यदि हमारा इस जन्म से पूर्व अस्तित्व न होता अर्थात् हमारा पूर्वजन्म न होता तो संसार के सभी मनुश्य व प्राणियों में, जिनके ारीरों में एक–एक चेतन आत्मा है, किसी भी प्रकार का भेद नहीं होना चाहिये थां सबकी आकृति, प्रकृति, संवेदनायें, ज्ञान व कर्म तथा परिवे ा एक जैसे होने चाहिये थें दो व अधिक मनुश्यों के दे ा, काल व परिस्थितियों तथा गुण–कर्म व स्वभाव में भेद **'कर्मफल सिद्धान्त व पूर्वजन्म'** को सिद्ध करता हैं हमारा पूर्वजन्म था, हमारे कर्म अलग अलग थे, उसी के अनुसार पुरस्कार व दण्ड स्वरूप हम मनुश्यों व इतर प्राणियों को नाना प्रकार के ारीर व अच्छी–बुरी परिस्थितियां ई वर द्वारा हम सभी को दी गईं हैं हमारा कर्तव्य है कि हम ई वर, जीव व प्रकृति के स्वरूप पर विचार व चिन्तन–मनन करें जिन प्र नों के उत्तर न मिले उसके लिए हमें सत्यार्थप्रकाा, ऋग्वेदादिभाश्यभूमिका, वेद, द र्न व उपनिशद् आदि ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहियें **अन्धवि वास के आधार पर किसी ग्रन्थ की कोई बात न मानें जो तर्क व युक्तिसंगत हो, सृश्टिकर्म के अनुकूल हो तथा जिसे अपनी आत्मा स्वीकार करे, उसी बात को ही मानना चाहियें** ऐसा करके जीवात्मा के सत्य, स्वतन्त्र, अनादि, अनुत्पन्न, जन्म–मरण धर्मा, कर्मानुसार सुख व दुखों को भोगने वाले चेतन स्वरूप का निर्भ्रान्त ज्ञान होता हैं ई वर व प्रकृति के सत्यस्वरूप सहित अपने लक्ष्य, उसकी प्राप्ति के साधनों व कर्तव्यों का ज्ञान भी हो जाता हैं

मनुश्य के रूप में हम विद्यमान हैं हमारा अस्तित्व चेतन जीवात्मा व मरणधर्मा ारीर का एक संयुक्त जीवन्त रूप हैं सभी लोगों की जीवनयात्रा अनादि काल से चल रही हैं लक्ष्य दुःखों से सर्वथा मुक्ति है जिसे मोक्ष कहते हैं मोक्ष प्राप्ति के लिए ई वर का सत्य ज्ञान व उपासना से उसका साक्षात्कार करना आव यक हैं साक्षात्कार तभी होता है जब जीवात्मा अपने पूर्व अ ाुभ कर्मों को प्रायः भोग लेता है और सद्कर्मों को करके आत्मा को पवित्र व दोशरहित कर लेता हैं हमें लगता है कि उपासना में देर से सफलता मिलने का एक कारण हमारे जन्म जन्मान्तर के अ ाुभ कर्म व उनका पूर्णतया भोग कर उन्हें समाप्त करना हैं जब तक अ ाुभ कर्मों का भोग पूरा नहीं होता, प्रयत्न व पुरुशार्थ करने पर भी जीवात्मा को ई वर साक्षात्कार नहीं होतां यदि अ ाुभ कर्म अधिक होंगे तो उपासना आदि साधनों को करने पर भी ई वर साक्षात्कार में विलम्ब हो सकता हैं अतः मनुश्य जीवन में

वेदाध्ययन से सत्य ज्ञान प्राप्त कर ईष वर की उपासना व सद्कर्मों पर ध्यान देना चाहियें अष ुभ कर्म पूर्णतः बन्द कर देने चाहियें ऐसी अवस्था बना लेने पर भी भोग के लिए बचे हुए पूर्व के अष ुभ कर्मों के कारण जीवन में दुःख आ सकते हैं ऐसा होने पर दुःखी न होकर अपने मोक्ष के साधनों के अनुसार कर्तव्य पथ का अनुसरण व अनुगमन करते रहना चाहियें ईष वर का साक्षात्कार हो या न हो, हमें लगता है कि ष ुभ कर्म व उपासना आदि साधनों का सही प्रकार से सेवन करने से हम उपासना व ईष वर–साक्षात्कार में आगे बढ़ते हैं इसे जारी रखना चाहिये और स्वयं को ईष वर में समर्पित रखना चाहियें ऐसा होने पर हम तीव्र गति से आगे बढ़ सकते हैं यह विष वास रखना चाहिये कि हम ईष वर द्वारा वेदों में कही गई ईष वर की प्राप्ती की यात्रा पर सही दिष ा में चल रहे हैं तो मंजिल कभी न कभी तो आयेगी हीं मंजिल दूर है अतः समय लग सकता हैं यह जरूरी नहीं की हमें हमारी मंजिल मोक्ष इसी जन्म में मिल जायें हमारे ऋशि व विद्वान बताते हैं कि मोक्ष प्राप्ति में अनेक जन्म भी लग सकते हैं इसके लिए धैर्य की आवष यकता हैं ष ायद इसी लिए धैर्य को धर्म का प्रथम लक्षण बनाया गया हैं

जीवात्मा अनादि काल से जन्म मरण के बंधनों में बंधता व छूटता आ रहा हैं हमारा अनेक बार मोक्ष भी हुआ है और अनेकानेक, अनन्त बार जन्म व मरण भी हुआ हैं हम संसार में दृश्टिगोचर होने वाली प्रायः सभी योनियों में एक व अनेक बार हम रह आये हैं और आगे भी यह क्रम जारी रहेगां हम व अन्य कोई जीव दुःख नही चाहतां इन अनचाहे सभी दुःखों से बचने का एकमात्र उपाय केवल मोक्ष के साधनों का सेवन व व्यवहार हैं मोक्ष को प्राप्त होकर जीवात्मा बहुत लम्बी अवधि, 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्शों तक, मुक्ति में दुःखों से सर्वथा मुक्त रहेंगे और ईष वर के सान्निध्य से उसके आनन्द को भोगेंगें उसके बाद पुनः जन्म, मरण, पुनर्जन्म होगा और देर में व ष ीघ्र फिर मुक्ति हो सकती हैं यह वेद व ष ास्त्रों का ज्ञान हैं इसमें वेद सहित हमारे दष न व उपनिशदकार आप्त ऋशि प्रमाण हैं जो असत्य व अनुचित कथन व ष ाब्द प्रयोग कभी नहीं करतें अतः इस पर पूर्ण विष वास रखना चाहियें हम यह भी बता दें कि हम कोई बड़े साधक नहीं हैं हमने जो पढ़ा, विचार किया व हमें उचित लगा, उसे हमने इस लेख में दिया हैं हमें लगता है कि हमारे विद्वान हमसे इन विशयों में पूर्णतः व कुछ सीमा तक सहमत होंगें इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं ओ३म् ष ाम्

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

ओ३म्

–आर्श गुरुकुल पौंधा के वार्शिकोत्सव में गुरुकुल सम्मेलन में कुछ विद्वानों के विचार–

'जो मनुश्य आध्यात्मिक विकास की ओर चलता है वह दुर्गुण व दुर्व्यस्नों से दूर रहता हैः डा. सोमदेव ष्ाास्त्री'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादूनं

मनमोहन कुमार आर्य

आर्श गुरुकुल पौंधा, देहरादून में वैदिक ष्ि ाक्षा व विद्या का प्रमुख केन्द्र हैं इस गुरुकुल का अट्ठारवां वार्शिकोत्सव 2 जून से आरम्भ होकर 4 जून को सम्पन्न हुआं दिनांक 4 जून, 2017 को गुरुकुल सम्मेलन सहित सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई व साथ मुख्य अतिथि पंतजलि योगपीठ के आचार्य बालकृश्ण जी का अभिनन्दन हुआं हम इस अभिनन्दन समारोह का समाचार व गुरुकुल सम्मेलन में अनेक विद्वानों के व्याख्याने को पूर्व दिनों में प्रस्तुत कर चुके हैं आज ष्ोश रहे व्याख्यानों को प्रस्तुत कर रहे हैं आष् ाा है कि आप पसन्द करेंगें

डा. सोमदेव ष्ाास्त्री जी का व्याख्यानः

अपने व्याख्यान के आरम्भ में डा. सोमदेव ष्ाास्त्री, मुम्बई ने आचार्य ष्ाब्द की व्याख्या कीं उन्होंने कहा कि जिसके द्वारा ब्रह्मचारी विद्यार्थियों की ष्ाारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक ष्ाक्ति का विकास किया जाये तथा जिससे इन विशयों की सत्य व यथार्थ ष्ि ाक्षा मिले उसे आचार्य कहते हैं डा. सोमदेव ष्ाास्त्री जी ने कहा कि आचार्य को ईष् वर, जीव व प्रकृति के विशय में जो ष्ि ाक्षा देनी है उसका आधार वेद ही हो सकता हैं वेदाध्ययन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि परमात्मा को प्राप्त करना तभी हो सकता है जब गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की आत्मिक ष्ाक्ति का विकास किया जायें ब्रह्मचारियों के जीवन व चरित्र विशयक न्यूनतायें दूर कर दी जायें ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करते हुए ब्रह्मचारी परमात्मा की प्राप्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बनायें आचार्य जी ने यज्ञोपवीत धारण करने व उसके महत्व पर भी अपने विचार प्रस्तुत कियें विद्वान वक्ता ने कहा कि आचार्य माता द्वारा गर्भस्थ ष्ि ाष् ाु का ध्यान रखने की ही भांति अपने ब्रह्मचारी का ध्यान रखता हैं ब्रह्मचारी की ष्ाारीरिक, आत्मिक ओर बौद्धिक उन्नति करना आचार्य का उद्देष् य हैं आचार्य जी ने ऋशि दयानन्द जी के कथनों का उल्लेख कर कहा कि सन्ध्या एवं दैनिक अग्निहोत्र का अनध्याय नहीं होतां उन्होंने कहा कि **जो मनुश्य आध्यात्मिक विकास की ओर चलता है वह दुर्गुणों व दुर्व्यस्नों से दूर रहता हैं** आचार्य जी ने पठन पाठन में ग्राह्य व निशिद्ध ग्रन्थों की चर्चा भी कीं उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने उन ग्रन्थों को निशिद्ध किया है जिसमें अष् लील संवाद व चर्चायें हैं उन्होंने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द ने खगोल ज्यातिश को स्वीकार किया है तथा फलित ज्योतिश को निशिद्ध किया हैं ऋशि दयानन्द ने पाखण्ड व अंधविष् वासों से समाज को बचायां आचार्य सोमदेव ष्ाास्त्री ने फलित ज्योतिश की अव्यवहारिक बातों पर विस्तार से सप्रमाण प्रकाष् ा डालां फलित ज्योतिश पर हमने डा. सोमदेव ष्ाास्त्री जी के अनेक स्थानों पर व्याख्यानों को सुना हैं आपने फलित ज्योतिश का विष् ोश अध्ययन किया हुआ है और उसकी अनेक मिथ्या मान्यताओं को भी स्मरण किया हुआ है जिसका वह अपने व्याख्यानों में यथास्थान उद्धरण देते रहते हैं यहां भी उन्होंने मिथ्या फलित ज्योतिश के अनेक उदाहरण दियें डा. सोमदेव ष्ाास्त्री ने मंगल व ष्ानि ग्रहों के मनुश्य जीवन पर प्रभावों व इनसे होने वाली हानियों का खण्डन कियां तुलसीदास जी के मूल नक्षत्र में जन्म लेने, मूल नक्षत्र में जन्म लेने वालों को होने वाली हानियों तथा उन सभी हानियों से बचने के उपायों सहित पौराणिक मान्यताओं पर विस्तृत प्रकाष् ा डाला और उनका उनका खण्डन कियां

डा. सोमदेव ष्ाास्त्री ने कहा कि आचार्य ब्रह्मचारी की उन्नति का दायित्व लेता हैं उन्होंने कहा कि हमारे स्कूलों में सदाचार की ष्ि ाक्षा नहीं दी जाती है जिससे देष् ा की भावी युवा पीढ़ी पर प्रतिकूल असर पड़ रहा हैं गुरुकुलों में यम व नियमों का पालन कराया जाता है परन्तु स्कूलों में इन महत्वपूर्ण जीवनोपयोगी बातों को पढ़ाया नहीं जातां अपने वक्तव्य को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि वह माता–पिता जिनकी सन्तानें गुरुकुलों में पढ़ती है, धन्य हैं

डा. विनय विद्यालंकार, हल्द्वानीः

गुरुकुल सम्मेलन में बोलते हुए युवा आर्य विद्वान व प्रभावष् ाली वक्ता डा. विनय विद्यालंकार ने कहा कि महर्शि दयानन्द जी ने पांच हजार वर्श पूर्व महाभारत से आरम्भ अविद्यांधकार में पड़े भारत देष् ा को अन्धकार से बाहर निकालकर उसे प्रकाष् ा में लाने का काम कियां **अविद्यान्धकार को मिटाने व ज्ञान का प्रकाष् ा करने का हमारे पास एक ही उत्तम साधन गुरुकुल हैं** विद्वान वक्ता ने कहा कि आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार का श्रेय हमारे गुरुकुलों व इसके विद्वानों को जाता हैं डा. विनय जी ने विगत दिनों महाविद्यालय स्तर पर आयोजित एक गोश्ठी की चर्चा की जिसका संचालन उन्होंने किया थां उन्होंने बताया कि उन्होंने गोश्ठी को ऋशि दयानन्द के सिद्धान्तों व मान्यताओं पर केन्द्रित करने का प्रयास किया जिसमें वह सफल रहें डा. विनय विद्यालंकार जी ने कहा कि वेदों का राश्ट्र व्यापक राश्ट्र हैं वेदों के आधार पर हम विकसित राश्ट्र की कामना कर सकते हैं गुरुकुल से जुड़ कर हम देष् ा को उन्नत करने की कामना को सफल कर सकते हैं आचार्य जी ने मनुश्य में पलने वाले अहंकार की चर्चा कीं उन्होंने कहा कि यदि सार्वदेष्ि ाक सभा का नेतृत्व स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के हाथों में सौंप दें तो सारा आर्यजगत उन्हें स्वीकार कर लेगां डा. विनय जी ने कहा कि गुरुकुलों से ही आर्यसमाज का संगठन बचेगां उन्होंने धर्म प्रेमी ऋशिभक्तों को कहा कि यहां से विद्वानों से सुने विचारों को अपने साथ ले जायें अपने परिवारों में ऋशि दयानन्द जी के विचारों को स्थान दें व उनका आचरण करें अपने घरों को गुरुकुल बना दें यहां की विष् ोशतायें अपने घरों में स्थापित करें प्रातः 4.00 बजे उठें आप अपने बच्चे गुरुकुल में पढ़ायेंगे या गुरुकुल के निर्धन बच्चों को गोद लेंगे तो आर्यसमाज का काम आगे बढ़ेगां डा. विनय विद्यालंकार जी का व्याख्यान ओजस्वी व प्रवाहपूर्ण था जिसके समापन श्रोताओं ने करतल ध्वनि कर व्याख्यान की महत्ता की पुश्टि कीं

आचार्य दयाष् ांकर विद्यालंकारः

हम स्वामी दयानन्द के इस कारण अनुयायी हैं कि उनका चरित्र सबसे महान हैं उन्होंने आजादी से पूर्व देष् ा में अंग्रेजी सरकार की सोच की चर्चा करते हुए बताया कि उन्होंने यह तय किया था कि भारत को बर्बाद करने के लिए इस देष् ा का चरित्र व इसकी प्राचीन मूल्यों पर आधारित ष्ि ाक्षा का नाष् ा करना हैं इसके लिए विदेष् ाी सरकार द्वारा कान्वेंट ष्ि ाक्षा लाई गईं आचार्य दयाष् ांकर ने इससे संबंधित व पाठ्यक्रम विशयक कुछ उदाहरण भी दिये और इसी सन्दर्भ में रिमझिम नामक पुस्तक की चर्चा भी कीं उन्होंने भाजपा विरोधी दलों की चर्चा करते हुए कहा कि यदि हम पाठ्यक्रम तो ठीक करें तो ये लोग हम पर भगवाकरण के आरोप लगाते हैं आचार्य दयाष् ांकर जी ने मां के खून, दीपक की लौ वा ज्योति, सूरज के भगवे रंगों की चर्चा कीं उन्होंने कहा कि इन रंगों के अतिरिक्त मनुश्य के मरने पर अन्त्येश्टि करने पर जो अग्नि जलती है उसका रंग भी भगवा होता हैं उन्होंने कहा कि प्रत्येक मनुश्य का जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त रंग भगवे रंग में रंगा हैं आचार्य जी रेलवे बोर्ड सहित भारत सरकार की कई परामष् र्दात्री समितियों के सदस्य हैं उन्होंने बताया कि आगामी दिनों में रेलवे बोर्ड द्वारा रेल में मांस व अण्डों से बना भोजन देना बन्द किया जा सकता हैं आचार्य दयाष् ांकर जी ने गुरुकुल को सरकार के सहयोग का आष् वासन दियां उन्होंने श्रोताओं को याद दिलाया कि उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद भाजपा मुख्यमंत्री श्री भुवनचन्द्र खण्डूरी जी ने संस्कृत को राज्य की दूसरी राजभाशा बनाया थां

ऋशिभक्त ठाकुर विक्रम सिंहः

आर्यसमाज की प्रसिद्ध विभूति व ऋशि भक्त ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि वह गुरुकुलों में तो नहीं पढ़े लकिन गुरुकुलों से उन्हें सबसे अधिक प्रेम हैं श्री विक्रम सिंह जी ने बताया कि वह महात्मा नारायण स्वामी आश्रम में पढ़े हैं हापुड़ में पं. रामचन्द्र देहलवी जी के चरणों में बैठकर भी वह पढ़े हैं विद्वान वक्ता एवं ऋशि भक्त ठाकुर विक्रम सिंह जी ने उड़ीसा में संचालित गुरुकुलों की चर्चा की और कहा कि वहां बहुत बड़ा काम स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने कियां आज की सामाजिक स्थिति पर व्यंग करते हुए ठाकुर साहब ने कहा कि आज समाज में मनुश्यों के रूप में पष् ाु घूम रहे हैं जिन्होंने न तो विद्यार्जन किया है और न वह परोपकार आदि के काम ही करते

हैं ऋशि भक्त विक्रम सिंह जी ने कहा कि यदि आप संस्कृत नहीं पढ़े हो तो संस्कृत पढ़ो, अपने बच्चों को पढ़ाओं और गुरुकुलों को सहयोग दों ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कालिदास व राजा भोज का प्रसंग सुनायां राजा भोज ने कालिदास जी को अपने ऊपर एक कविता की पंक्तियां लिखने को कहा थां कालिदास नहीं माने और नगर छोड़कर दूर जंगलों में चले गयें राजा भोज ने उन्हें ढूंढ निकालां वेष ा बदल कर वह कालिदास के पास गये और उनसे चर्चा कीं कालिदास ने उनसे राजाभोज के बारे में पूछा तो वह बोल कि राजा भोज अब संसार में नही रहें यह सुनकर कालिदास जी दुःखी हो गये और राजा भोज के गुणों का उल्लेख संस्कृत में कविता करके करने लगें ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कालिदास की वह कविता भी सुनाई इसके एक वाक्य का अर्थ था कि राजा भोज दुनिया से क्या गये, सारी दुनिया संस्कृत विद्या से विहीन हो गई हैं अपने भाशण को विराम देते हुए विद्वान वक्ता ने कहा कि संस्कृत भाशा में जो विष ेशतायें हैं वह किसी भाशा में नहीं हैं

आचार्या डा. अन्नपूर्णा, द्रोणस्थली कन्या गुरुकुलः

आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि गुरुकुल का उद्देष य मानव का निर्माण करना हैं गुरुकुल में मनुश्यों की पाष ाविक प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर उसे मनुश्य बनाया जाता हैं ईष वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान गुरुकुल में ब्रह्मचारियों को कराया जाता हैं हमारा ष ारीर यज्ञमय है अतः हमें यज्ञ व यज्ञीय कार्यों को करना चाहियें हमें हमारा ष ारीर संसार का कल्याण करने के लिए ईष वर से प्राप्त हुआ हैं

इसके बाद मुख्यतः पतंजलि योगपीठ के विख्यात आचार्य बालकृश्ण जी का सम्मान हुआं इस समारोह को स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं आचार्य बालकृश्ण जी ने सम्बोधित कियां हम इन दोनों महानुभावों के विचार 5 जून, 2017 को पहले ही एक लेख में प्रस्तुत कर चुके हैं जिन्हें काफी सराहा गया हैं हमें भी वह विचार अच्छे लगे जिससे हमारा किया गया परिश्रम सफल हो गयां इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं ओ३म् ष ाम्

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121